

कविवर पंडित दानतरायजी कृत



श्री
पंचमेरु
पूजन



तीर्थंकरों के न्हवन-जलतैं भये तीरथ शर्मदा,
तातैं प्रदच्छन देत सुर-गन पंचमेरुन की सदा।
दो जलधि ढाई द्वीप में सब गनत-मूल विराजही,
पूजौं असी जिनधाम-प्रतिमा होहि सुख, दुख भाजही ॥



ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीति जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह !

अत्र अवतर अवतर संवौषट्, इति आह्वानम् ।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीति जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह !

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीति जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह !

अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् इति सन्निधिकरणम् ।





(चौपाई आँचलीबद्ध)



सीतल-मिष्ट-सुवास मिलाय, जलसौं पूजों श्री जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करो प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन-विजय-अचल-मन्दिर-विद्युन्मालीपंचमेरुसंबंधि-अशीति
जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।



(चौपाई आँचलीबद्ध)



जल केशर करपूर मिलाय, गंधसौं पूजों श्री जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करो प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधिअशीति जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो
भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।



(चौपाई आँचलीबद्ध)



अमल अखंड सुगंध सुहाय, अच्छतसौं पूजों जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करो प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीति-जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो
अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।



(चौपाई आँचलीबद्ध)



बरन अनेक रहे महकाय, फूलसों पूजों श्री जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करो प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबन्धि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः
कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।



(चौपाई आँचलीबद्ध)



मन-बांछित बहु तुरत बनाय, चरुसों पूजों श्री जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करो प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबन्धि-अशीति-जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः
क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



(चौपाई आँचलीबद्ध)



तम हर उज्ज्वल ज्योति जगाय, दीपसौं पूजों श्री जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करो प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो
मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।



(चौपाई आँचलीबद्ध)



खेऊँ अगर अमल अधिकाय, धूपसों पूजों श्री जिनराय
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करो प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो
अष्टकर्मविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।



(चौपाई आँचलीबद्ध)



सुरस सुवर्ण सुगन्ध सुभाय, फलसौं पूजौं श्री जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करो प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबन्धि-अशीति-जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो
मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।



(चौपाई आँचलीबद्ध)



आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजों श्री जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करो प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



जयमाला

(दोहा)

प्रथम सुदर्शन-स्वामि, विजय अचल मन्दर कहा ।
विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जग में प्रकट ॥

(बेसरी छन्द)

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भू पर छाजै ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
ऊपर पाँच-शतक पर सोहै, नन्दन-वन देखत मन मोहै ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
साढ़े बासठ सहस ऊँचाई, वन सुमनस शोभै अधिकाई ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥

ऊँचा जोजन सहस-छतीसं, पाण्डुक-वन-सोहै गिरि-सीसं ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
चारों मेरु समान बखाने, भू पर भद्रसाल चहुँ जाने ।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
ऊँचे पाँच शतक पर भाखै, चारों नन्दनवन अभिलाखै ।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥

(बेसरी छन्द)

साढ़े पचपन सहस्र उतंगा, वन सौमनस चार बहुरंगा ।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
उच्च अठाइस सहस्र बताये, पाण्डुक चारों वन शुभ गाये ।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
सुर-नर-चारन वन्दन आवैं, सो शोभा हम किह मुख गावैं ।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबन्धि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो
जयमालामहाघ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।



(दोहा)

पंचमेरु की आरती, पढ़े सुनै जो कोय ।
'द्यानत' फल जानै प्रभो, तुरत महासुख होय ॥
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)